

- ENLARGE (v.t.)** : I. In gen. : (1) वर्धयति (c. of वृध्) : v. To increase ; (2) विस्तारयति (c. of स्तृ) : v. To extend. II. To release : q.v. : मुञ्चति (मुच्, c. 6.).
- ENLARGE (v.i.)** : I. Lit. : वर्धते (वृध्, c. 1.), *the fish e.d there* : स तत्र ववृधे मत्स्यः, Mah. : v. To increase, extend. II. *To e. upon* : प्रपञ्चयति (पञ्च, c. 10.), *now we will e. on its different states* : इदानीं तस्यैवावस्थाभेदः प्रपञ्चयते, S. : v. To detail.
- ENLARGEMENT** : I. Extension, expansion : q.v. : वृद्धिः, वि-, R. II. Release : q.v. : मोक्षः. III. Expatiation : विस्तारः.
- ENLIGHTEN** : I. To lighten : q.v. : दीपयति (c. of दीप्). II. To instruct : ज्ञानं ददाति (दा, c. 3.) (=to give knowledge) ; (2) चक्षुरुन्मीलयति (c. of मील्) (=to open the eyes) ; (3) उद्भासयति (c. of भास्) (rare).
- ENLIGHTENED** : perh. उद्भासितः (ता, तं) : v. Educated.
- ENLIGHTENMENT** : perh. संविद्, *the Lord of e.* : संविदामीशः, Ki. : v. Refinement, civilization.
- ENLIST (v.t.)** : I. To enroll : q.v. : (1) गृह्णाति (ग्रह्, c. 9.) (=to take) ; (2) उत्थापयति (c. of स्था) (=to raise). II. To gain over : perh. निवेशयति (c. of विश्) or ग्राहयति (c. of ग्रह्), *I will e. them in the cause of trust* : *तान् सत्यार्थे निवेशयामि or सत्यपथं ग्राहयामि.
- ENLIST (v.i.)** : I. To engage in : विशति, प्र-, (विश्, c. 6.). II. To enter heartily in a cause : निविशते, अमि-, (विश्, c. 6.).
- ENLISTMENT** : I. The act : v. To enlist. II. A writing : *प्रवेशपत्रम्.
- ENLIVEN** : (1) उत्तेजयति (c. of तिज्) (=to excite : q.v.) ; (2) हर्षयति (c. of हृष्) (=to gladden : q.v.).
- ENLIVENING** : हर्षजननः (नी, नं) : v. Joyful.
- ENMITY** : (1) वैरम्, *should not make e. with any one* : न वैरं कुर्वीत केनचित्, B.p. ; *e. towards Udāraka* : उदारके वैरम्, D. ii. ; (2) शत्रुता ; (3) विद्वेषः ; (4) शत्रुत्वम् ; (5) दौहृद्यम् (rare) ; (6) विरोधः (=feud).
- ENNOBLE** : I. To dignify : (1) उन्नमयति (c. of
- नम्) ; (2) उत्कर्षयति, प्र-, (कृष्, c. 1.) ; (3) उत्श्राययति (c. of श्रि). II. To raise to the nobility : *अनुराजं or अध्वार्यं करोति.
- ENNUI** : स्वेदः : v. Weariness.
- ENORMITY** : I. Greatness : घोरता. II. An atrocious crime : q.v. : घोरपातकम्.
- ENORMOUS** : I. Inordinate : असाधारण (f. णी). II. Great : (1) महाप्रमाण or बृहत्प्रमाण or अतिप्रमाण (f. णा) (=of e. size) ; (2) विशालः (ला, लं) (=large : q.v.) III. Atrocious : q.v.
- ENORMOUSLY** : अत्यन्त- in comp. : v. Exceedingly.
- ENOUGH** : (1) अलम् ; *all this is not e. for one* : सर्वं तन्नालमेकस्य, Mah. ; *e. of this story* : अलमनया कथया, K. ; (2) पर्याप्तः (प्ता, प्तं). *I am e. for all the Rākshasas in battle* : सर्वेषामेव पर्याप्तो राक्षसानामहं युधि, Ram. ; *and so much fuel is e. for cooking so much food* : इयत्तश्चौदनस्य पाकायैतावदिन्धनं पर्याप्तम्, D. ; (3) प्रचुरः (रा, रं) (=abundant). Ph. : *and I have not had e. of (lit. not satiated with) youth* : न च तृप्तोऽस्मि यौवने, Mat. ; *more than e. for hundred years' consumption* : ब्रह्मशतोपमोरेऽप्यक्षय्यम्, D.
- ENQUIRE** : I. To ask : q.v. : अनुयुक्ते (युज्, c. 7.), *e.d of him what was to be given and how much* : किं प्रदेयं कियद्वेति तमन्वयुक्, R. II. To seek to know : जिज्ञासते, *we will now e. into the nature of spirit* : प्राणः किंस्वरूप इतीदानीं जिज्ञास्यते, S. III. To examine, consider : q.v. : अनुसन्धायति or धत्ते (धा, c. 3.), *personally e.d into disputes* : विवादान् स्वयमनुसन्धायौ, M.n.
- ENQUIRY** : I. Asking : अनुयोगः, *whoever I may be (you) should make no e.* : यास्मि सास्यानुयोगो मे न कर्तव्यः, Mah. II. Seeking to know : जिज्ञासा, *e. after duties* : धर्मजिज्ञासा, M.d. ; *a subject of e.* : जिज्ञास्यम्, S. III. Examination, consideration : q.v. : अनुसन्धानम्.
- ENRAGE** : (1) कोपयति, प्र-, सं-, (c. of कुप्), *I will e. him* : कोपयाम्येनम्, B.r. (2) क्रोधयति (c. of कुध्) ; (3) रोषयति (c. of रुष्) ; (4) कोपं जनयति (c. of जन्) ; (5) क्रोधं उत्पादयति (c. of पद्), K. ; (6) संरम्भं नयति (नी, c. 1.), R. ; etc.
- ENRAGED** : (1) क्रुद्धः (द्धा, द्धं) ; (2) कुपितः (ता,